म्यूज़िक ख़िरमने ईमान के लिए चिंगारी

इस किताब में हम पढ़ेंगेः

➔ हक़ परस्तों की जिम्मेदारी
➔ इंसान पूरी क़ायनात का खुलासा
➔ इंसान क़ुदरते ईलाही का शाहकार
➔ इंसान को वहशी बनाने की साज़िश
➔ गुफ्तगु की फहाशी
➔ लह्वल हदीस किस चीज़ को कहा जाता है ?
➔ नज़र बिन हारिस का घिनौना किरदार
➔ पर्दे के पीछे नर्म गुफ्तगु पे पाबंदी
➔ गाने वाले को शैतान की थपकी
➔ गवय्यन के पास बैठने वाले का अंजाम
➔ गाना गाने वाला शैतान
➔ पेट में पीप का भर जाना गाने से बेहतर
➔ गाने से दिल में निफाक़
➔ सारंगी की आवाज़ और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हु का अमल
➔ गाना सुनना गुमराही है
➔ उम्मत में ख़स्फ मस्ख़ और क़ज़फ का अज़ाब
➔ मुआशरे में म्यूज़िक हलाक़त का सबब
➔ कानों को गानों से बचा के रखने वालों का ईनाम

तक़रीरः डॉ.मुहम्मद अशरफ आसिफ जलाली साहब

email: labbaikyarasoolallah_indore@rediffmail.com

मदनी इल्तिजाः इस रिसाले में अगर किसी जगह ग़लती पाएं तो ब-ज़रिअ़ए ईमेल मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन
वस्सलातु वस्सलामु अला सय्यदिल अंबियाए वल मुरसलीन
व अला आलेहि व अस्हाबेहि व अहले बैतेहि
व औलियाए उम्मतेहि अजमईन

अम्मा बाअद
फआऊजोबिल्लाहे मिनशैतानिर्रजीम

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم

وَمِنَ النَّاسِ مَنۡ یَّشۡتَرِیۡ لَہۡوَ الۡحَدِیۡثِ لِیُضِلَّ عَنۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ بِغَیۡرِ عِلۡمٍ ٭ۖ وَّ یَتَّخِذَہَا ہُزُوًا ؕ اُولٰٓئِکَ لَہُمۡ عَذَابٌ مُّہِیۡنٌ

(कुरआन ;सूरह नंबर 31 ;सूरह लुकमान)

सदकल्लाहुल अज़ीम व सदक़ रसूलोहुन्नबिय्युल करीमुल मतीन.

اِنَّ اللّٰہَ وَمَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوۡنَ عَلَی النَّبِیِّ ؕ

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا صَلُّوۡا عَلَیۡہِ وَسَلِّمُوۡا تَسۡلِیۡمًا

अस्सलातो वस्सलामो अलैक़ा या सय्यदी या रसूलल्लाह
व अला आलिका व अस्हाबिका या सय्यदी या हबीब अल्लाह

मौला या सल्लि वसल्लिम दाईमन अबदा अला हबीबिका

खैरिल ख़ल्कि कुल्लिहिमि

अल्लाह तबारक व तआला की हम्दो सना और हुजूर पुरनूर, दस्तगीरे जहाँ, ग़मगुसारे ज़मां सय्यदे सरवरा अहमदे मुजतबा जनाबे मुहम्मदे मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरबारे गौ़हरबार में हदिया ए दुरूदो सलाम अर्ज़ करने के बाद। अरबाबे फिक्रो दानिश, अस्हाबे मुहब्बत व मवद्दत, निहायत मोअज़्ज़ि व मोहतशिम हज़रात व ख़्वातीन! रब्बे जुलजलाल के फ़ज़्लो और उसकी तौफीक़ से आज हमारी गुफ्तगु का मोजूअ है

" म्यूज़िक ख़िरमने ईमान के लिए चिंगारी "

मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला हम सब को मौसिकी (म्यूज़िक) की गंदगी से मेहफूज़ फरमाए और हमारे ज़ाहिर व बातिन को मज़ीद तहारत अता फरमाए–

हमारे इस दौर के जो सुलगते मसाइल हैं उन में से एक अहम मसअला म्यूज़िक का मसअला है। अरबी ज़बान में इसे أغنية गिना कहा जाता है फिर ये एक किस्म का गाना है जिस के साथ मुख़्तलिफ किस्म के आलात इस्तिमाल किये जाते हैं जिस की वजह से ये आग कई रूप धार लेती है। ईमान और यक़ीन के गुलशन विरान हो जाते हैं कोई भी साहिबे अक़्ल और साहिबे बसीरत इंसान म्यूज़िक की तबाहकारियों का इंकार नही कर सकता।जिस कदर हमारा मुआशरा इस आग की लपेट में आ चुका है, उस से भी किसी को इंकार नही। पूरी की पूरी फिज़ा गंदगी से भर चुकी है। लोग इतने परेशान हैं कि उन्हें अपने घरों में बैठना और म्यूज़िक से मेहफूज़ रहना मुश्किल होता जा रहा है। इसी तरह गाड़ियों में, दुकानों में, दफ्तरों में लोगों ने म्यूज़िक का अंधाधुन इस्तिमाल शुरू कर रखा है, यहाँ तक कि गधा गाड़ियों पर भी इसका एहतिमाम कर दिया गया और शैतान के अड्डे बड़े–बड़े बाज़ारों में ही नही, छोटे छोटे मोहल्लों में भी खुल गए। सी.डी सेंटर और म्यूज़िक के दूसरे स्टेशन शैतानी हैड ऑफिस के तौर पर हर जगह खुद बखुद क़ायम हो चुके हैं, नस्ले नौ को भुना जा रहा है। हर तरफ से किरदार धुंधले होते जा रहे हैं, मुआशरे में ज़िना (रेप) और इस तरह की बदकारियों में दिन बदिन इज़ाफा होता जा रहा है। चादर और चार दिवारी का तक़द्दुस पामाल होता जा रहा है और दिन दहाड़े मुख़्तलिफ जराईम, जिन के बारे में सोचा भी नही जा सकता था, हो रहे हैं। इन सबके पीछे जो चीज़ मोहर्रिक़ (काम कर रही) है वह म्यूज़िक है। म्यूज़िक का जो इस्तिमाल है उस ने मुआशरे को आतिश–फशां बना दिया है। आप सब जानते हैं कि जिस वक़्त आतिश–फशां फटता है तो उस की तबाही दूर दूर तक मेहसूस होती है– ये गंदगी का सैलाब भी जिसके अंदर पूरी कौम डूबती जा रही है, सिवाए चंद घरानों और चंद इंसानों के इज्तिमाई तौर पर म्यूज़िक ने पूरे मुआशरे को अपनी लपेट में ले रखा हैं

हक़ परस्तों की जिन्नेदारी

ऐसे माहौल में हक़ परस्तों पर ये फर्ज़ आयद होता है कि वह म्यूज़िक के

ख़िलाफ जिहाद के लिये कुरआनो सुन्नत का असलहा (औजार) इस्तिमाल करें और कुरआनो सुन्नत के पैग़ाम को आम करते हुए इस आग को बुझाने की कोशिश करें, वर्ना जो थोड़ा बहुत मताअ–ए–दीन का का तहाफ्फुज़ है ये भी ख़त्म हो जाएगा। जहाँ शर्मो–हया की दौलत है उस के लुट जाने का खतरा है और जहाँ किरदार उजले हैं वहाँ भी आलूदगी के हमला–आवर हो जाने का ख़तरा है। अहले ईमान के चेहरों का एक गुलशन नज़र आ रहा है और मुझे अपने रब के फ़ज़्लो–करम पे यक़ीन है कि इंशाअल्लाहये कलिमात दिलों की अथाह गहराईयों में असर करेंगे। इस पैग़ाम को जज़्ब किया जाएगा और जज़्ब कर के इस पैग़ाम को पूरी दुनिया में आम कर दिया जाएगा। इस इज्तिमा में हर तरह के लोग शामिल हैं हर फील्ड से तआल्लुक रखने वाले लोग हैं। हज़रातो ख़्वातीन का ये भरपूर इज्तिमा अहले ईमान का दीन के साथ दिलचस्पी का मज़हर भी है और हमिय्यते दीनी का तर्जुमान भी है।

कुरआने मजीद ने चुँकि हर मर्ज़ का इलाज किया है और ये ऐसा काम नही है कि एक साल या दो साल के अमराज़ के ख़िलाफ तो जिहाद करता और क़यामत तक की बिमारियों को छोड़ देता चुँकि ये कुरआन हमेशा के लिए है तो इस ने हमेशा की बिमारियों का इलाज किया और हर दौर के अंदर जो बदी सर उठाने वाली थी उस बदी का कुरआने मजीद ने इलाज किया।

इंसान पूरी क़ायनात का ख़ुलासा

आप जानते हैं कि इंसान अल्लाह तआला की तख़्लीक़ का एक शाहकार है। अल्लाह तआला ने इंसान को इस तरह का बनाया है कि ये पूरे जहां (दुनिया) का खुलासा है। सारी क़ायनात इंसान में सिमट कर आ गई है। क़ायनात की हर मख़्लूक़ की कोई न कोई मिसाल और उस का अंदाज़ अल्लाह तआला ने इंसान में रखा है। इंसान में पहाड़ों की मिसाल भी है, इंसान के अंदर जमीन की मिसाल है, इंसान के अंदर आसमान की मिसाल है और बारिश बरसने का भी एक अंदाज़ मौजूद है, इंसान के अंदर आग जैसी हरारत भी है, इंसान के अंदर वह ठंडक भी है जिस से जिगरे–लाला के अंदर बेकरारी पैदा हो जाए। ये इंसान पूरी क़ायनात का खुलासा है। अल्लाह तआला ने इस को माअजून मुरक्कब बनाया है और इस के अंदर जो चीज़ें रखी हैं उन में अल्लाह तआला ने एक हिदायत–नामा दिया है अगर वह तवाज़ुन सही रहेगा तो इंसान एक पावर है और एक किरदार है।

इंसान कुदरते ईलाही का शाहकार

इंसान अल्लाह तआला की कुदरत का शाहकार है और इंसान की अंदरूनी कुव्वतों का तवाज़ुन बिगड़ जाए तो फिर इंसान एक बिमार चीज़ का नाम है। फिर इंसान जिस वक़्त पस्ती की तरफ जाता है तो हैवान से भी नीचे गिर जाता है। इस वास्ते हमें ये सोचना है कि हमें जिस ख़ालिक़ ने पैदा किया उस ख़ालिक़ ने इंसान के अंदर की कुव्वतों को मुनासिब अंदाज़ में रखने के लिए एक निज़ाम दिया है और उस निज़ाम के मुताबिक़ इंसान अगर ज़िंदगी बसर करता है तो फिर अंदर की आग नही भड़कती, फिर शेहवत को जोश नही आता , फिर इंसान एक मुत्मईन समंदर की तरह

है और फिर इंसान में एक वक़ार है और एक संजिदगी है, एक मतानिब है और फिर उस की नेकी बढ़ती है तो फरिश्तों को भी रश्क़ आता है। फिर इंसान के किरदार और अज़्मत के लिए फरिश्ते भी तड़पते हैं और इस को मेहसूस करते हैं। इस इंसान के अंदर अक़्ल भी है, ग़ज़ब (जलाल) भी है, शेहवत भी है। अगर इन चीज़ों को कंट्रोल कर के अक़्ल का झण्डा लहरा दिया जाए तो ये फरिश्तों से बढ़ जाता है। अगर हैवानियत को खुला छोड़ दिया जाए और अक़्ल को मग़लूब कर दिया जाए तो फिर ये इंसान डंगर ही नही बल्कि डंगरों से भी गया गुज़रा होता है। वह क्या चीज़ है जिस की वजह से इंसान के अंदर की कुव्वत में एक कजी वाक़ेअ होती है और इंसान के अंदर आग लग जाती है, शेहवत भड़क उठती है, शोले उठते हैं, जिसकी वजह से इंसान का घर ही नही पूरा मोहल्ला तबाह व बरबाद होता है, तो मेरे भाईयों उस आग को जो चीज़ भड़काती है उसे म्यूज़िक कहा जाता है।

इंसान को वहशी बनाने की साज़िश

इंसान के अंदर जो एक मोज़नियत (अच्छापन) थी उसे ख़त्म कर के मआज़ अल्लाह इंसान को वेहशी बनाना और इंसान को हवस परस्त बनाना और इंसान को एक भैड़िये की शक्ल देना, ये सारा म्यूज़िक का किरदार है। जिस की वजह से वो कुव्वतें जो आपस में मोतवाज़ुन (बेलेंस्ड) थीं, जिन के अंदर एक सुकून और करार था, ठंडक और इत्मिनान था, उन के अंदर कजी वाक़ेअ होती है तो शैतानियत आ जाती है और जिस वक़्त इंसान के अंदर शैतानियत वाक़ेअ होती है फिर उस को मेहसूस नही होता कि वह कौनसी हदें फलांग रहा है, कौनसी चरागाह में चर रहा है और वह कहाँ डाका डाल रहा है और कहाँ इज़्ज़तें लूट रहा है और कहाँ अस्मत की चादरों को तार–तार कर रहा है, जो चीज़ इंसान को इस तरह बदमस्त बनाती है उसे म्यूज़िक कहा जाता है। म्यूज़िक की वजह से इंसाान के अंदर हैवानियत जलवागर होती है। हैवानियत सर गर्मे अमल होती है। जिस की वजह से जो इंसान कुदसियों से भी अफज़ल था आहिस्ता आहिस्ता मआज़ अल्लाह कुत्तों की हरकतों की तरफ उतर आता है। जिस की वजह से न उसका अपना वक़ार रहता है न सोसायटी में कोई अमन व सुकून बाकी रहता है। तो हमारे लिए ये जरूरी है कि हम वह जरासीम मार दें और वह काँटें काट दें जिन की वजह से इंसान के अंदर हैवानियत अपने शर की तरफ जाती है। बल्कि ऐसा निसाबे ज़िंदगी कुरआने मजीद की शक्ल में हम अपने सामने रखें कि अगर आस–पास के हालात में कोई बदी आ भी जाए तो इंसान के अंदर नेकी की इतनी मज़बूत पॉवर हो कि वह साँस ले तो फिज़ा दुरुस्त हो जाए, उस की बात से माहौल में रौशनी पैदा हो जाए और उस के किरदार की वजह से सारा जमाना हर किस्म की उरियानी फहाशी से मेहफ़ूज़ हो जाए। आप देखते हैं कि इंसान की एक ज़ाहिरी सेहत है, हर इंसान के अंदर कुछ इख़लात हैं। ये इख़लात अगर मुनासिब रहें तो बन्दे की सेहत सही रहती है। अगर उन में कजी वाक़ेअ हो जाए, तवाज़ुन ख़त्म हो जाए तो बन्दे की सेहत सही नही रहती। अंदर ही से इंन्क़िलाब आ जाता है और अंदर ही से बिमारी पैदा होती है। अंदर ही ठंडक है और अंदर ही गर्मी है। अंदर ही खुश्की है और अंदर ही तरी है।जैसे ज़ाहिरी सेहत के लिहाज़ से ये है तो ऐसे ही बातिनी सेहत के लिहाज़ से भी है। इंसान के अंदर कुछ ऐसी ताक़तें हैं कि वह मुनासिब रहेंगी

तो कुछ भी नही होगा। न आग होगी, न शोले होंगे, न लावा फूटेगा और न हो कोई जलजला आएगा। और अगर उन कुव्वतों को मआज़ अल्लाह ख़राब कर दिया गया और उन में अगर इफरातो–तफरीक़ की सी कैफियत पैदा हो गई तो फिर इंसान के अंदर ही बुराई का मर्कज़ है। अंदर ही से बदी निकलेगी, अंदर से हर तरह के फित्ने पैदा होंगे। ये वो म्यूज़िक के शोले हैं जिस की वजह से इंसान की रुहानियत बिमार हो जाती है। वह खुद भी बिमार होता है और माहौल को भी बिमार करता है। हमें कुरआनो सुन्नत का ये पैग़ाम इस अंदाज़ में ये सबक़ दे रहा है, अगर हम उसे सामने रख कर , कुरआन कि और नबी अलैहिस्सलाम के फरमान को लेकर अपने अंदार की इस्लाह करें तो फिर ये माहौल आतिश–फशां नही होगा। अल्लाह तआला के फज़्ल से ये अहले ईमान का गुलशन बन जाएगा।

गुफ्तगु की फहाशी:

अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद की सूरह लुक़मान में इर्शाद फरमाया:

وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِىْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ
وَّ يَتَّخِذَهَا هُزُوًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ

(कुरआनुल करीम, सूरह लुक़मान आयत नंबर 6)

وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِىْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ

(तर्जुमा ए कंजुल ईमानः लोगों में कुछ वह हैं जो खेल की बात खरीदते हैं)

हर चीज़ का एक "लह्व" है, हर चीज़ के अंदर एक फहाशी है। कुछ लोग ऐसे हैं जो बात और गुफ्तगु की फहाशी को और "लह्व व लईब" को खरीदते हैं।

لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ

(ताकि वह अल्लाह तआला के रास्ते से बहका दें बे समझे)

وَّ يَتَّخِذَهَا هُزُوًا

(और उस को वह मज़ाक बना दें)

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ

(उन लोगों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है)

लह्वल हदीस किस चीज़ को कहा जाता है ?

लह्वल हदीस لَهْوَ الْحَدِيْثِ गाना बजाना है। हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हु और हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदियल्लाहु अन्हु और हज़रते जाबिर रदियल्लाहु अन्हु, ऐसे ही ताबईन में से हज़रते सईद बिन जुबैर रदियल्लाहु अन्हु और हज़राते इमाम मुजाहिद, हज़रत इमाम मक्हूल और हज़रत इमाम हसन बसरी रदियल्लाहु तआला अन्हुम उन सब के नज़दीक लह्वल हदीस لَهْوَ الْحَدِيْثِ क्या है? फरमाते हैं कि लह्वल हदीस لَهْوَ الْحَدِيْثِ से मुराद गाना–बजाना है। ये सहाबा व

ताबईन लह्वल हदीस का मआना ग़िना से कर रहे हैं कि अल्लाह तआला उन लोगों की मज़म्मत करता है जो गाने गाते हैं, साज़ बजाते हैं, मुख्तलिफ किस्म के आलाते मौसिकी को इस्तेमाल करते हुए म्यूज़िक का धंधा करते हैं , अल्लाह तआला उन लोगों की मज़म्मत करते हुए फरमा रहा है "जिस ने किसी तरह भी आवाज़ का शर फैलाया, आवाज़ का फित्ना फैलाया और आवाज़ का फित्ना फैलाकर लोगों के ईमान को लूटा और नेकी को ख़राब किया तो अल्लाह तआला फरमाता है कि ये लोग दुनिया में भी अज़ाब के मुस्तहिक़ हैं और आख़िरत में भी अज़ाब के मुस्तहिक़ हैं, इस वास्ते कि ये वबाई बिमारी का सबब बने हैं ,खुद भी ख़राब होते हैं और जहाँ जहाँ उनकी आवाज़ जाती है वहाँ वहाँ काशाना ए यक़ीन को आग लग जाती है। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने उन लोगों की भरपूर मज़म्मत फरमाई।

लह्वल हदीस से मुराद गवय्यन औरतें

उस ज़माने में इस तरह नही था कि जैसे आज म्यूज़िक, केबल कनेक्शन, सोंग डाउनलोडिंग,डी.टी.एच और सी.डी केसेट वगैरह का कारोबार है, वहाँ पर बक़ाईदा कोई इंसान रखना पड़ता था । बड़े–बड़े मुजरिम गवय्यन औरतें ख़रीद लेते थे , उन लोंडियों को रखते थे और उन से गाने सुनते थे और शबाब व कबाब की मेहफिलों में उन से गीत सुनते थे– तो " " से मुराद कुछ मुफस्सिरीन गवय्यन औरतें लेते हैं या खुद गाने बजाने का धंधा करने वाले लोग जो आलात को भी इस्तेमाल करते हैं या फिर वो गवय्यन औरतें ख़रीद लेते थे और उस की वजह से आगे बुराई को फैलाते थे। बहर हाल जो मतलब भी लिया जाए, उस में म्यूज़िक की मज़म्मत की जा रही ,गाने बाजे की मज़म्मत की जा रही है और क़यामत तक के लिए अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में इस पैग़ाम को रख के अपने बंदों को अपने दीन की सच्ची राह दिखाई है।

नज़र बिन हारिस का घिनौना किरदार

इस सिलसिले में नज़र बिन हारिस नामी एक शख़्स का किरदार बड़ा घिनौना था। उस के पीछे उस के तरीक़े पर आज हमारे हुक्मरान भी चलते हैं। उस तरीक़े पर जितने भी फहाशी का धंधा कर रहे हैं सारे नज़र बिन हारिस की पैरवी में जा रहे हैं और जितनी गैरमुस्लिम कुव्वतें आज मुसलमानों को लूटने के लिए फहाशी को आम कर रही हैं और इस गाने बजाने को तरक़्क़ी देना चाहती हैं,ये सारे नज़र बिन हारिस के पैरोकार हैं। नज़र बिन हारिस ने जिस वक़्त वह धंधा किया तो अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल की जिस में लह्वल हदीस का ज़िक्र कर उस का काम किया था, आज हमें सोचने की जरूरत है। न जानते हुए, आज हम किसी के एजेन्ट बन चुके हैं और न जानते हुए किसी की ख़्वाहिश को पूरा कर रहे हैं। कलिमा तो हम ने हज़रते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पढ़ा और रब्बे जुलजलाल की तौहीद का कलिमा पढ़ा है लेकिन हम में कुछ लोगों का अमल मआज़ अल्लाह ऐसा है जो अल्लाह तआला के दीन को छोड़ के और रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान को छोड़ कर, नज़र बिन हारिस की बुराई और उस के ग़लत प्रपोगंडे, उस के ग़लत नज़रिये को आगे बढ़ा रहे है। इस वास्ते आज सोचो कि उसका कितना घिनौना किरदार था। नज़र बिन हारिस जिस वक़्त ये देखता था कि लोग कलिमा ए इस्लाम पढ़ रहे हैं, कुरआन

पढ़ते हैं और सारी बुराईयों को छोड़ जाते हैं, तो उसने एक तेहरीक़ हा आगाज़ किया। रूह–उल–मआनी में तफसील केव साथ इस का शाने नुज़ूल मौजूद है।

नज़र बिन हारिस की मुसलमानों के ख़िलाफ साज़िश

नज़र बिन हारिस ने नौजवान लड़कियाँ खरीदना शुरू कर दी, लोंडियाँ खरीदी और बहुत सी तादाद में उस ने अपने पास एक जमाअत बना ली। जिस वक़्त कोई शख़्स कलिमा ए इस्लाम पढ़ता और कुरआने मजीद की तरफ मुतवज्जे होता तो ये अपनी तरफ से एक लड़की की पेशकश करता और उन लड़कियों को उसने सिखा रखा था कि मै जिधर तुम्हें भेजूँ, तुम्हारे तमाम अख़्राजात मेरे जिम्मे हैं और तुम ने उन लोगों को जा कर गाने सुनाना हैं, उन के सामने रक़्स (नाच) करना है और उन्हें खूब खिलाना औ़र पिलाना है और जिस वक़्त मस्त हो जाएं तो फिर तुम्हें उन से पूछना है कि बताओ वह जो कुछ तुम्हे हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कहते हैं, उस में लज़्ज़त है या इस में लज़्ज़त है जो नज़र बिन हारिस तुम्हे पेश कर रहा है। कितनी बड़ी इस्लाम के ख़िलाफ साज़िश थी।

नज़र बिन हारिस लोंडियों को पालता रहा, औरतों को मण्डियों से खरीदता रहा और मुसलमानों के किरदार को लूटने के लिए उस ने ये साज़िश शुरू की और औरतों से गाने गवा अकर, उन्हें गवय्यन बना कर मुसलमानों के किरदार को पाश–पाश करना चाहा और उस के बाद वो लोंडियाँ पूछती कि **" बताओ हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)** तो नमाज़ का हुक़्म देते हैं, रोज़े का हुक़्म देते हैं,जिहाद का हुक़्म देते हैं जिसमें खून बहाना पड़ता है और जिस में भूखा रहना पड़ता है और जिसमें आराम छोड़ना पड़ता है, उस में तो मआज़ अल्लाह कोई लज़्ज़त नही है। लज़्ज़त तो इस में है जो हम पेश कर रहीं हैं। जिस वक़्त ऐसा धंधा नज़र बिन हारिस ने शुरू किया तो अल्लाह तआलाने ये आयत नाज़िल फरमा दी और इस को वाज़ेह फरमा दिया कि हज़ारों नज़र बिन हारिस जैसे लोग आ जाएं, मेरे मेहबूब अलैहिस्सलाम के गुलाम जिन्होने सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इश्क़ अपने सीने में रखा है वह किसी लोंडी के पीछे नही जाएंगे, हमेशा अपने किरदार को गुंबदे ख़िज़रा की हरियाली में रौशन रखेंगे।

नज़र बिन हारिस का वारिस कौन ?

ये कितनी गहरी साज़िश और मंसूबा था। नज़र बिन हारिस तो मुश्रिक था। उस की जगह आज हमारी सोसायटी में कौन आ गए,जिन्होने उसी का तरीक़ा अपना रखा है ? नज़र बिन हारिस के पैरोकार कौन बने, नज़र बिन हारिस के वारिस कौन बने ? नज़र बिन हारिस के इस वक़्त अलम–बरदार कौन बने ? आज की इस सोसायटी के अंदर जो शख़्स म्यूज़िक का धंधा कर रहा है और म्यूज़िक का कारोबार कर रहा है, वह नज़र बिन हारिस का पैरोकार है और नज़र बिन हारिस का वारिस है और जो शख़्स आज सुन्नते नबवी का झंडा लेकर गाने बजाने को रोक रहा है और म्यूज़िक के ख़िलाफ बंध बांध रहा है और म्यूज़िक की चिंगारियों को बुझाने के लिए कुरआनो सुन्नत की बूँदा–बाँदी कर रहा है अल्लाह तआला ने उसी को हज़रते मुहम्मद मुस्तफा (सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम) के मिशन की विरासत अता फरमाई है।

बात सोचने की है, शायद किसी को नज़र बिन हारिस का नाम भी न आता हो, मगर काम उस का ज़िंदा किया जाए।क्या मुसलमान का ईमान बाक़ी रहेगा ? क्या यही अहदे वफ़ा है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के साथ। आपने तो ताईफ के बाज़ार में पत्थर खा कर, अपना खून बहा कर भी इस दीन ए इस्लाम का झंडा ऊँचा किया था। हम कलिमा सरकार अलैहिस्सलातो वस्सलाम ला पढ़ें और एजेंट नज़र बिन हारिस के बन जाएं ये कैसे हो सकता है ? हमारे ख़िलाफ मुस्लिम दुश्मन कुव्वतें इस से बड़े हमले कर रही हैं। नज़र बिन हारिस का एजेंडा बढ़ाने के लिए अमेरिका,बरतानिया और इसराईल हर वक़्त मसरूफ है, यहूदी हर वक़्त इस सोच में हैं कि मुसलमानों को लूटना कैसे है ? इन को गाने बजाने में मसरूफ कैसे करना है और हमारे दुश्मन खुद बखुद हर वक़्त ऐसे हमले कर रहे हैं और अगर हम भी उन्हीं के एजेंट बन जाएं तो फिर बच कैसे सकेंगे, फिर बचेगा कौन और इस मुआशरे में कोई इंसान इस से बचाएगा कैसे ?

इस वास्ते मेरे भाईयों! आज ताईब होते हुए, जो शख्स आज तक म्यूज़िक सुनता रहा और जिस के कानों के अंदर ऐसी आवाज़ दाख़िल होती रही, पक्की तौबा करते हुए एक आँसू नदामत का अपनी आँखों से बहाए और आज के बाद के लिए ये पक्का अहद करे कि ऐ अल्लाह तेरे दरबार में मै वादा कर रहा हूँ कि मेरी जान तो जा सकती है मगर कभी भी मेरे कानों में शैतान की आवाज़ दाख़िल नही हो सकती।

म्यूज़िक से माहौल को पाक़ रखना दीने इस्लाम का तक़ाज़ा है:

जो शख्स नमाज़ पढ़ता है, रोज़ा रखता है और साथ ऐसा धंधा भी करता है, उसे सोचना चाहिए कि वह लोगों के दीन को लूट रहा है और अपना दीन भी खराब कर रहा है। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मुहब्बत का तक़ाज़ा है कि जहाँ तक तुम्हारे असरात हैं वहाँ तक म्यूज़िक के निशानात खत्म कर दिये जाएं। इस दाग़ को अपने मोबाईल फोन से लेकर अपने घर के माहौल तक उस को मिटा दिया जाए और हर तरफ से उस को खत्म करो। कोई ऐसी ट्यून जो मोबाईल में सुनते वक़्त या सुनाते वक़्त आती है वह भी शैतानी आवाज़ है, उस से भी रुहानियत खत्म हो जाती है। इस के साथ साथ फिर जितने रेडियो और टी.वी पर इस तरह के अंदाज़ हैं वह सारे के सारे शैतानी अंदाज़ हैं और फिर अपने कारोबार के मराकिज़ को इस से पाक़ रखो, अपने सफर की गाड़ियों को इस से पाक़ रखो और अपने घर की चार दिवारी को इस से पाक़ रखो, अपने माहौल को पाक़ रखो। खुदा की कसम मै अल्लाह के फ़ज़्ल की उम्मीद पर ज़मानत देता हूँ अगर आज हम अपने माहौल को म्यूज़िक से पाक़ कर लें, जितनी दुआएं कुबूल नही होतीं सारी की सारी कुबूल हो जाएंगी।

अहसन हदीस कुरआन का नुज़ूल और उसके असरात

اَللهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَ قُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللهِ

कुरआने मजीद सूरह ज़ुमर की आयत नंबर 23 में अल्लाह तआला इर्शाद फरमाता है:

اَللّٰہُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِیْثِ کِتٰبًا مُّتَشَابِہًا مَّثَانِیَ

{ अल्लाह तआला ने सबसे ख़ूबसूरत बात जो नाज़िल की है, वह किताब है जिस के मज़मून आपस में एक जैसे हैं ,जो दोहरे बयान वाली है }

تَقْشَعِرُّ مِنْہُ جُلُوْدُ الَّذِیْنَ یَخْشَوْنَ رَبَّہُمْ

और जो रब से डरते हैं, कुरआन सुन कर उनके रोंगटे खड़े हो जाते हैं

ثُمَّ تَلِیْنُ جُلُوْدُہُمْ وَ قُلُوْبُہُمْ اِلٰی ذِکْرِ اللّٰہِ

फिर उन की खालें भी नरम होती हैं और उन के दिल भी नरम होते हैं।

सारे अल्लाह तआला के ज़िक्र की तरफ मुतवज्जे होते हैं।
कहाँ वह मुसलमान घराने जहाँ सुबह कुरआने मजीद की तिलावत होती थी और सारा दिन उस का असर रहता था आँखें नम हो जाती थीं, रोंगटे खड़े हो जाते थे, खालें काँप जाती थीं, दिल लरज़ उठते थे और कहाँ आज सुबह से शाम तक रात से सुबह तक एक शैतानी खेल खेला जाता है। बेहयाई और उरियानी है और फिर सिर्फ गाना जो कबीह था वह ही नही रहा बल्कि उस से आगे कई सिलसिले शुरू हो चुके हैं।
शरीअते मोतह्हरा में तो उस आवाज़ पर पाबंदी लगाई गई थी जो आवाज़ लोगों को गुमराह कर सकती हो। फिर उस आवाज़ के अंदर ग़लत मुहब्बतों के मज़मून और रोमांस दोहरी बुराई है। फिर उस के साथ म्यूज़िक बजाना ये उस में तीसरी बुराई है और फिर मर्द की गुफ्तगु औरत का सुनना और औरत का गाना मर्द के लिए सुनना, उस में मज़ीद कई हलाकतों का पैश खैमा है। सिर्फ एक बिमारी नही बल्कि यहाँ तो बिमारियाँ ही बिमारियाँ हैं।

पर्दे के पीछे नर्म गुफ्तगु पे पाबंदी

कुरआने मजीद ने तो आग़ाज़ से मना कर दिया था यहाँ तक कि अज़वाजे मोतह्हरात अपने घर में बैठी हैं, उन से जिस वक़्त कोई शख्स पर्दे के पीछे से कोई चीज़ मांगने आता है तो तक़द्दुस कितना है सहाबा ए किराम का यक़ीन कितना है, तक़वा कितना है। अपनी माँओं से वह कोई चीज़ मांगने जाते हैं, अज़वाजे मोतह्हरात को उस का जवाब देना है उस जवाब पर कुरआने मजीद ने कितने पहरे लगाए—अल्लाह तआला ने इर्शाद फरमाया:

یٰنِسَآءَ النَّبِیِّ لَسْتُنَّ کَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَیْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَیَطْمَعَ الَّذِیْ فِیْ قَلْبِہٖ مَرَضٌ وَّ قُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا

ऐ मेरे नबी अलैहिस्सलाम की घर वालियों! तुम अगर तक़वा इख़्तियार करती रहो, तुम जैसी कायनात में कोई औरत नही है।

فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ

बात करते वक़्त नर्म लहज़े में बात न करो। (सूरह अहज़ाब आयत नंबर 32)

जिस वक़्त तुम से कोई मर्द कुछ पूछने आ जाए कि फलां चीज़ घर में है या नही, तो तुम्हें जिस वक़्त बात करना पड़े तो वहा बात नर्म लहज़े की नही होना चाहिए। बात ऐसी नही होना चाहिए कि जो मर्द को मीठी लगे। बात सख़्त लहज़े में होना चाहिए, ये अल्लाह तआला का हुक़्म अज़वाजे मोतह्हरात को है और बात करने वाले सहाबा ए किराम हैं, जिन के तक़्वा की कोई मिसाल नही है। अल्लाह तआला इर्शाद फरमाता है– فَيَطْمَعَ الَّذِىْ فِىْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ → हो सकता है कोई मुनाफिक़ आया हुआ हो तो उस के दिल में बिमारी पैदा हो सकती है। तुम्हे बोलते वक़्त सख़्त लहज़े में बोलना है ताकि तुम्हारी आवाज़ उस को सख़्त लगे और किसी रतह का कोई दूसरा ख़याल पैदा न हो सके। इस हुक़्म में अज़वाजे मोतह्हरात को बात का जवाब देते वक़्त पाबंद किया गया कि आप को नर्म गुफ्तगु नही करनी और इस अंदाज़ में नही बोलना जिस में एट्रेक्शन हो, इस अंदाज़ में नही बोलना कि जिस से रग़बत पैदा हो सकती हो। आम घर के कामों की गुफ्तगु के लिहाज़ से इस्लाम ने पाबंद कर दिया, तो इस इस्लाम में ये कैसे जाइज़ होगा कि एक औरत बन–ठन कर अपनी आवाज़ ही इस लिए निकालती है कि लोग मेरी आवाज़ को सुनें और फिर उस आवाज़ में मज़मून गंदा है तो उस से मज़ीद गंदगी बढ़ जाएगी, फिर उस के साथ म्यूज़िक भी है तो मज़ीद गंदगी बढ़ जाएगी और फिर वह मर्दों के सामने नुमाईश करेगी तो मज़ीद गंदगी बढ़ जाएगी– बेवजह तो आज पूरा माहौल नही जल रहा।

बिला वजह तो नही चमन की तबाहियाँ।
कुछ बाग़बां हैं बर्क़ व शरर से मिले हुए।।

रोज़ाना दुनिया में हज़ारों वाक़िआत नाजाइज़ तआल्लुकात के हो रहे हैं, इस के पीछे ये बिमारियाँ हैं। इस दीन ए इस्लाम ने तो इस हद तक औरत की आवाज़ को भी मेहफूज़ किया था लेकिन आज जो हो रहा है जैसे कोई झूठा राज़े मुहब्बत बयान हो रहा हो और उसके साथ आवाज़ में एट्रेक्शन पैदा की जाए और लोगों की शेहवत उभारने वाला अंदाज़ इख्तियार किया जाए और म्यूज़िक के साथ मर्दों के सामने अदाएगी की जा रही हो ये तो बड़े दूर के मामले हैं। आज की इस दीने मतीन की धरती के अंदर हमें इस आयत को सामने रखते हुए पूरी तरह मर्द अपनी आवाज़ को बचाएं कि इस के अंदर किसी औरत के लिए फितना हो और औरत अपनी आवाज़ को बचाए मर्दों के लिहाज़ से कि मर्दों के लिए उस में कोई फितना हो। यहाँ तक जिस वक़्त हम पाबंदी कर लेंगे (इंशा–अल्लाह) अल्लाह तआला की तरफ से अज्र व सुकून का नुज़ूल हो जाएगा।

एक छोटा सा हौज़ हो उस में बहुत बड़ा पत्थर गिर जाए और फिर लहरें भी पैदा न हों ये कैसे हो सकता है ? खुश्क लकड़ियाँ हों और उन्हें आग लगाएं ले. किन शोले न उठें ये कैसे हो सकता है ? अगर वाकई इस पर यक़ीन है तो फिर दिल में ये बात बिठा लेनी चाहिए हमारा पानी काा मुक़द्दस हौज़ है हमारे घर का माहौल और हमारे मुल्क का माहौल उस में फहाशी के पत्थर डाले जा रहे हैं, लहरें पैदा न होना नामुमकिन है। उन लहरों का दर्द तो मेहसूस होता है। जब किसी की इज़्ज़त लुट

जाती है फिर उसे दर्द मेहसूस होता है मगर इस से पहले ही ऐसा एहतिमाम होना चाहिए कि हौज़ में पत्थर न गिराया जा सके। पहले ही ऐसा एहतिमाम होना चाहिए कि जहाँ पर खुश्क लकड़ियों को आग लगाई जा रही हो उस आग से लकड़ियों को बचाया जाए। तो इस सिलसिले में रसूले अकरम सल्ललल्लाहु अलैहि वसल्लम के चन्द फरामीन आपके सामने पेश कर रहा हूँ।

गाने वाले को शैतान की थपकी

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इर्शाद फरमाते हैं:

"जो आदमी गाना गाना चाहे, अगर्चे अभी म्यूज़िक साथ न बजा हो, सिर्फ जिस वक़्त बगैर बाजे के गाना गाना शुरू करता है तो अल्लाह तआला उस के दोनों कँधों पर एक एक शैतान बैठा देता है"

कितना मन्हूस है वह इंसान जिसके कँधे पर शैतान बैठा है और वह उस को हरकत दे रहा है, थपकी दे रहा है और ये इंसान गाना गा रहा है। जिन को कौम स्टार कहती है वह कैसे "फिन्नार" हो चुके हैं। उस के कँधों पर शैतान बैठे होते हैं जूँ जूँ वह गाता है शैतान उस को थपकी देता है, शैतान उसको दाद देता हैं

ऐ बंदा ए मोमिन! तुझे दाद अल्लाह तआला के दरबार से मिलना चाहिए, तुझे दाद तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरबार से मिलना चाहिए। वह दाद उस वक़्त मिलेगी जब ज़बान पे अल्लाह तआला का कलाम होगा, ज़बान पे दीने इस्लाम की बातें होंगी, ज़बान पे नात शरीफ और दुरूदो सलाम होगा।

लिहाज़ा अपने इस माहौल में ऐसे लोगों की हौसला–शिकनी करना चाहिए कि जिन्होने खुद भी आग का धंधा कर रखा है और लोगों को भी आग की तरफ मुतवज्जे कर रहे हें और जिस वक़्त वो ये काम कर रहे होते हैं तो शैतान उन के कँधों पे बैठ कर खुशी कर रहे होते हैं। मोमिन वो है जो ऐसे अंदाज़ को अपने लिए भी नाप. संद करता है, ओरों के लिए भी उस (शैतानी काम) को नापसंद करता है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया:

- ▶मुझे भेजा इस लिए गया है कि मै बाजे तोड़ दूँ, सारंगियों को तोड़ दूँ।
- ▶मै ढोल तोड़ने के लिए भेजा गया हूँ।

गवय्यन के पास बैठने वाले का अंजाम

जो शख्स किसी गवय्यन के पास बैठता है, उस से गाना सुनता है तो उस के साथ क्या होगा ? जब कयामत का दिन होगा तो उस के कानों में पिघला हुआ सीसा डाला जाएगा कि उस ने ऐसा क्यों किया (यानी गाना क्यों सुना)

आज इस की बड़ी आसानी हो गई। पहले कोई पैसे वाला होता कोई गवय्यन खरीदता और फिर उस का गाना सुनता और फिर जहन्नमी बनता, लेकिन आज घर घर टी.वी है, घर घर वी.सी.आर है, घर घर सी.डी प्लेयर है।हर चीज़ में

औरतों और मर्दों के गाने मौजूद हैं और फिर इस को जुर्म नही समझा जा रहा। इस को रिफ्रेशमेंट कहा जाता है, इस को तफरीह कहा जाता है। हत्ता कि हालते रोज़ा में और नमाज़ के वक़्तों में भी लोग गाने सुनने में मसरूफ होते हैं।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ये जुमला कयामत तक के तमाम मुसलमानों को झिंझोड़ रहा है कि अगर तुम ने मेरा कलिमा पढ़ा है तो जिसको मै बेहतर समझता हूँ उसे बेहतर समझना होगा और जिस को मै तुम्हारे लिए खतरनाक समझता हूँ उसे खतरनाक समझना होगा। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं जो गाना सुन रहा है उस के कानों में सीसा पिघला के डाला जाएगा। कयामत के दिन इतना शदीद अज़ाब बंदे के सामने होगा. उस वक़्त उसकी क्या हालत होगी?

इस वास्ते मेरे भाईयों! ये चन्द दिनों की ज़िंदगी गाने के बगैर गुज़ार दें, उस के बगैर भी ज़िंदगी में लज़्ज़त है। गाने के बगैर भी इस ज़िंदगी में चाशनी मौजूद है, लिहाज़ा गानों और म्यूज़िक से अपने कानों को बचाते हुए हमें अपनी ज़िंदगी बसर करना चाहिए ताकि अल्लाह तआला अपोअनी तरफ से अज्रे अज़ीम अता फरमाए।

गाना गाने वाला शैतान

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ الثَّقَفِيُّ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنِ ابْنِ الْهَادِ، عَنْ يُحَنِّسَ، مَوْلَى مُصْعَبِ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ بَيْنَا نَحْنُ نَسِيرُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم بِالْعَرْجِ إِذْ عَرَضَ شَاعِرٌ يُنْشِدُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم
" خُذُوا الشَّيْطَانَ أَوْ أَمْسِكُوا الشَّيْطَانَ لأَنْ يَمْتَلِئَ جَوْفُ رَجُلٍ قَيْحًا خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَنْ يَمْتَلِئَ شِعْرًا " .

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुक़ामे “अर्ज” पर मौजूद थे, एक गवय्या सामने आ गया । जिस वक़्त आप ने उसे देखा तो इर्शाद फरमाया خُذُوا الشَّيْطَانَ
मेरे सहाबा शैतान को पकड़ो। ये तुम्हारे सामने चलता फिरता शेतान है। जिस को रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शेतान कहा आज हमारी कौम के बेटे उनकी तकलीद करते हैं, उन जैसे बाल रखते हैं, उन जैसा हुलिया बनाते हैं, उन लोगों जैसे कपड़े पहनते हैं, उन्हें अपना हीरो समझते हैं और उन्हें इज़्ज़तें देते हैं। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया कि ये इज़्ज़त वाला नही ये शैतान है कि जिस ने गाने का धंधा किया, जो गाने का आदी बन गया और लोगों के सामने लोगों के यक़ीन को लूटने लगा, तब आपने फरमाया कि ये शैतान है इस को पकड़ लो।

पेट में पीप का भर जाना गाने से बेहतर

इस मौके पर रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये जुमला इर्शाद फरमाया था:

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالاَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ يُونُسَ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ سَعْدٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم

قَالَ " لأَنْ يَمْتَلِئَ جَوْفُ أَحَدِكُمْ قَيْحًا يَرِيهِ خَيْرٌ مِنْ أَنْ يَمْتَلِئَ شِعْرًا " .

(सहीह मुस्लिम शरीफ)

अगर इंसान का दिल और सीना और इंसान का पेट पीप से भर जाए ये उस से बेहतर है कि उस के दिल में कोई गाना मौजूद हो– उस के अंदर कोई गाना मौजूद हो । पेट के अंदर कोई इतनी गंदगी नही है जितनी गंदगी गाने की है।

आज हमारे बच्चे जिस वक़्त गाने गाते हैं, वालिदेन खुशी से बैठ कर सुनते हैं और फिर उन्हें दाद देते हैं कि मेरा बच्चा गाना गा रहा है, इस को इतनी फिल्मों के गाने आते हैं, इतने गाने फिल्मी एक्टरों की तरह गा सकता है। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि जो मेरी उम्मत का होगा उस के लिए जरूरी है कि वह अपने आप को बचाए रखे। अंदर अगर गंदगी है तो बाहर भी गंदगी होगी, अंदर अंधेरा है तो बाहर भी अंधेरा होगा। दिल में गाने होंगे तो ज़बान भी गंदी होगी, माहौल गंदा हो जाएगा। सुथरा एक ही अंदाज़ है कि तुम अपने सीनों को कुरआने मजीद की सूरतों से भर लो, सीना भी मदीना बन जाएगा और ज़िंदगी भी मदीना बन जाएगी।

गाने से दिल में निफाक़

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान है:
जिस तरह पानी लगाने से खेती पैदा होती है और कई जड़ी–बूटियाँ पैदा हो जाती हैं, कई बीज सिर्फ पानी लगाने से खुद बखुद उग जाते हैं, ऐसे ही बंदे के दिल की धरती में भी कुछ बीज हैं वहाँ का एक पानी है वह पानी जिस वक़्त लगता है तो दिल के गुलशन और दिल की खेती में भी जड़ि–बूटियाँ पैदा होती हैं। ज़ाहिरी ज़मीन पर पानी लगा तो कई किस्म की बूटियाँ पैदा हो गईं, अच्छी भी और कांटेदार भी, फूलों वाली भी। दिल की ज़मीन में मुनाफिक़त के बीज मौजूद हैं उस वक़्त तक वह नही उगते जब तक शैतानी पानी नही पहुँचता। लेकिन जिस वक़्त शैतानी पानी पहुँचता है फिर दिल में मुनाफिक़त की बूटियाँ जनम लेती हैं। अगर शैतानी पानी न हो तो वह पानी न बीज तक पहुँचता है और न वह बीज उगता है और न ही मुनाफिक़त पैदा होती है। वह पानी कौनसा है ? तो वह गाना बजाना है और उस का पानी है। इस की वजह से दिल में मुनाफिक़त पैदा होती है और इस की वजह से दिल में बुराईयाँ पैदा होती हैं। आज हम अपने आप को और अपने बच्चों को गाने से तो मेहफूज़ न रख सकें और फिर शिकायत ये करें कि बच्चा मेरा है, पता नही इतनी शरारतें क्यों करता है। बच्चा मेरा है काम शैतानों वाले करता है। मुझ पर किसी काम में नही गया और दिन रात शैतान के कामों में लगा रहता है।

मेरे भाईयों! बच्चा रहमानी काम तब करेगा जब दिल शैतानी पानी से बचा हुआ होगा। अगर खुद बच्चे को फिल्म देखने ले जाओ और खुद बच्चे को बुराई के लिये साथ ले जाओ, उसे खुद उस काम की तरफ लगा दो और फिर तुम शिकायत करो कि बच्चा नेकी नही करता ,वह कैसे नेकी कर सकेगा ? मरकज़ तो दिल है। वहाँ नेकी होगी तो हाथ में नेकी होगी। दिल में नेकी होगी तो कान में नेकी होगी। दिल में नेकी होगी तो आँख में नेकी होगी। दिल में नेकी होगी तो ज़बान पे नेकी होगी। लेकिन

जिस वक़्त दिल ही शैतान का गढ़ बन जाएगा तो फिर नेकी कहाँ से आएगी ? इस वास्ते मेरे भाईयों! मुनाफिक़त और हर किस्म के शर से बचने के लिए ये जरूरी है कि म्यूज़िक से फिज़ा को साफ कर लिया जाए और कम से कम अपना माहौल तो साफ किया जाए। कानों में उंगली देकर अपने आप को बचाया जाए। रब्बे काबा के फज़्ल की उम्मीद है जब हर तरह की पाबंदी होगी और म्यूज़िक से भी अपने आप को जिस वक़्त हर इंसान बचाएगा तो उस के दिल में नूर का दरख़्त पूरे गुलशन की शक्ल इख़्तयार कर जाएगा।

सारंगी की आवाज़ और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हु का अमल

حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عُبَيْدِ اللَّهِ الْغُدَانِيُّ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ مُوسَى، عَنْ نَافِعٍ، قَالَ سَمِعَ ابْنُ عُمَرَ، مِزْمَارًا - قَالَ - فَوَضَعَ أُصْبُعَيْهِ عَلَى أُذُنَيْهِ وَنَأَى عَنِ الطَّرِيقِ وَقَالَ لِي يَا نَافِعُ هَلْ تَسْمَعُ شَيْئًا قَالَ فَقُلْتُ لاَ . قَالَ فَرَفَعَ أُصْبُعَيْهِ مِنْ أُذُنَيْهِ وَقَالَ كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَسَمِعَ مِثْلَ هَذَا فَصَنَعَ مِثْلَ هَذَا

हज़रत नाफेअ कहते हैं कि मै हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हु के साथ था। سَمِعَ ابْنُ عُمَرَ، مِزْمَارًا आप को सारंगी की आवाज़ आई فَوَضَعَ أُصْبُعَيْهِ عَلَى أُذُنَيْهِ तो आपने अपनी उंगलियाँ अपने कानों में डाल कर कान बंद कर लिये और रास्ता तब्दील कर के दूसरे रास्ते पर चले गए। हज़रते नाफेअ कहते हैं कि काफी दूर चले गए। मै उस वक़्त छोटा था। हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हु ने मुझ से पूछा هَلْ تَسْمَعُ شَيْئًا قَالَ فَقُلْتُ لاَ . قَالَ فَرَفَعَ أُصْبُعَيْهِ مِنْ أُذُنَيْهِ " क्या तुम्हें कोई आवाज़ आ रही है ? तो मेने कहा कि मुझे कोई आवाज़ नही आ रही। फिर आपने अपने कानों से उंगलियाँ बाहर निकाल लीं। وَقَالَ كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَسَمِعَ مِثْلَ هَذَا فَصَنَعَ مِثْلَ هَذَا और कहा कि उस वक़्त मै नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ था, उन्होने भी ऐसा ही किया था। (यानि सारंगी वगैरह की आवाज़ आने पर कानों में उंगलियाँ डाल ली थीं

(सुनन अबि दाउद शरीफ, किताबुल आदाब باب كَرَاهِيَةِ الْغِنَاءِ وَالزَّمْرِ)

ये हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हु सहाबी हैं, उन्हें दूर से सारंगी की आवाज़ आई तो अपने कानों में उंगलियाँ दे कर कान बंद कर लिये और रास्ता बदल दिया और फिर हज़रते नाफेअ से पूछ कर अपने कानों से उंगलियाँ निक. ाली। फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हु ने नाफेअ से कहा कि ऐ नाफेअ सुनो मेने ये सब कुछ इसलिए किया है कि एक दिन जब मै छोटा था मै रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जा रहा था ऐसी ही आवाज़ आप को आई थी तो आप ने अपने कानों में उंगलियाँ दे लीं थीं और रास्ता बदल लिया था । मेने आप से उस दिन का सबक़ हासिल किया है और मेने तुम्हारे सामने ऐसा अमल किया है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर अमल करते हुए ताकि कयामत तक इस दीने इस्लाम के बच्चे बच्चे को पता चल जाए कि हम वह नही हैं कि जिन के कान शैतानों के गढ़ बन जाएं और जिन के कानों में शैतानों का पेशाब दाख़िल हो जाए– नही नही। हमने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गुलामी का पट्टा अपने गले में डाला है, जिन्होने हमें ये सबक़ पढ़ाया और बताया कि तुम्हारे लिये ये जरूरी है कि जिस वक़्त ऐसी आवाज़ आ रही हो तुम्हारे इख़्तियात में उस को बंद करना न हो तो अपने कान तो बंद कर सकते हो। अपने कानोम में जब

तुम उंगलियाँ डाल लोगे तो अल्लाह तआला पक्का और हक़ीक़ी ईमान ता फरमाएगा।

गाना सुनना गुमराही है

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिक्मत भरी बातें और अपनी उम्मत को जो आपने लाहे अमल दिया है उस के लिहाज़ से आपका कितना प्यारा फरमान है। " जो शख़्स गाना बजाना गौ़र से सुनता है वो मअसिय्यत कर रहा है।" मतलब ये है कि बंदा गुज़र रहा था रास्ते में गाने की तरफ उस ने तवज्जो शूरु कर दी अपने तौत पर तो फिर जेसे भी हो गुनाहगार है। किसी ने गाना लगाया हुआ था ये गुज़र रहा था। गुज़रते गुज़रते उसके कानों में आवाज़ पड़ी तो उसने कानों में उंगलियाँ नही दी और उसकी तरफ मुतवज्जे हो गया रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि ये "मअसिय्यत" है। अगर उस ने गाने बाजे की मेहफिल में बैठ कर हँसना शुरू कर दिया तो सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि "ये बेठना फिस्क़ है" फिर वह गाना सुनकर लज़्ज़त हासिल करना कुफ्र है। आज ये सारे काम होते हैं। इस को अपना कल्चर कह दिया जाता है। फिर कहते हैं कि हम थके हुए थे अब हम तफरीह कर रहे हैं और इस से ज़हन ताज़ा कर रहे हैं।

भाईयों! ज़हन ताज़ा उस से करो जिस से ज़हन ताज़ा होता है और जिस से ज़हन आतिश फशां बने उस की शरीअते मोतह्हरा में इजाजत नही है। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन अल्फाज़ बोल दिये– "फिस्क़ , मअसिय्यत और कुफ्र"। ये तीनों काम हमारे रुटीन में दाख़िल हो गए– टी.वी पर हर वक़्त गाना चल रहा है। अगर कोई बंदा तस्वीर न भी देखे लेकिन आवाज़ें तो हर वक़्त घर में गूँज रहीं हैं। वह मुसलमानों के घर जहाँ कुरआन की आवाज़ गूँजती थी जहाँ रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूदो सलाम पढ़ने की आवाज़ गूँजती थी और जहाँ रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नात पढ़ने की आवाज़ गूँजती थी उन में आज बेहया और बेशर्म लोगों के गाने बजाने की आवाज़े गूँज रही हैं और फिर रोकने वाला कोई नही। हर शख़्स कहता है कि मै किसी को क्यों कुछ कहूँ। मै अपनी बात का जिम्मेदार हूँ। मै किसी को कुछ नही कहूँगा। अगर सारे लोग ऐसा कहना शुरू कर दें फिर दीन तो चुप हो जाए। दीन तो ख़ामौश हो जाए। दीन तो फिर अपने घर बैठ जाए और सारे माहौल को खुला छोड़ दिया जाए। नही नही, ये पालिसी हमारे दीने इस्लाम की पालिसी नही है। हमारे दीन की पालिसी ये है कि खुद भी बचना है और ओरों को भी इन बुराइयों से बचाना है।

उम्मत में ख़स्फ मस्ख़ और क़ज़फ का अज़ाब

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ये फरमान हम अपने सामने रखें अभी भी वक़्त है, अभी भी पानी सर से नही गुज़रा। तिरमिज़ी शरीफ की हदीस शरीफ है। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया है कि इस उम्मत में ख़स्फ भी होगा, मस्ख़ भी होगा और क़ज़फ भी होगा।

अभी तक मजमूई तौर पर ऐसा नही हुआ। ख़स्फ का मतलब है कि

बस्तियाँ धंस जाएंगी। लोग रात को सोएंगे,सुबह को बस्तियाँ मिट चिकी होंगी। मस्ख़ का मतालब ये है कि चेहरे बदल चिके होंगे। सोएंगे तो इंसान होंगे, उठेंगे तो मआज़ अल्लाह ख़िन्ज़ीर बन चुके होंगे, बंदर बन चुके होंगे। क़ज़फा का मतलब ये है कि आसमान से पत्थरों की बारिश होंगी। हर तरफ से पत्थर बरसना शुरू हो जाएंगे।

मुआशरे में म्यूज़िक हलाक़त का सबब

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस वक़्त ये हलाक़तें बयान कीं कि ऐसा वक़्त आ जाएगा, ऐसा हो सकता है तो एक सहाबी ने अर्ज़ कि या रसूलल्लाह सल्ललाहु अलैका वसल्लम ऐसा कब होगा ? तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमायाः जिस वक़्त मुआशरे में कंजरियाँ पैदा हो जाएंगी और मुआशरे की बड़ी तादाद गवय्यन औरतों की बन जाएगी और आलाते मौसीकी आम हो जाएंगे, हर तरफ उन का गाना–बजाना आम हो जाएगा– मज़ामीर, सारंगियाँ, तबले, बाजे, डोल आम हो जाएंगे। और शराबें पी जाएंगी,क्लब बन जाएंगे, होटलों में शराब आम हो जाएंगी। फिर उस वक़्त ऐसी हलाक़तें आ सकती हैं। मेरी उम्मत को उन हलाक़तों के आ जाने से पहले अपना हिसाब कारना चाहिए। अगर उन्हें ख़स्फ, मस्ख़ और क़ज़फ से बचना है तो उन लोगों को लगाम देना है जो माहौल में ऐसा धंधा कर रहे हैं। जो रोज़ाना फिल्म इंडस्ट्री के लिए बक़ाईदा बजट मंज़ूर किये जाते हैं। नौजवान बच्चों की हौसला अफज़ाई की जा रही है कि वह गाना गाएं और नौजवान बच्चों को एक्टर बनाया जा रहा है। आज इस बात की हौसला–शिकनी करना होगी। अगर शराबें आम हो जाएंगी, लोग फैशन के तौर पर पीना शुरू कर देंगे। अगर ऐसा मिल्लत में रांज रहा तो फिर मआज़ अल्लाह हमें ऐसा मंज़र देखना पड़ जाएगा कि रात को सोएं और सुबह को ख़िंज़ीर बन चुके हों और बस्तियाँ उलट चुकी हों, पत्थरों की बारिश हो चुकी हो। अल्लाह तआला हमें ऐसे वक़्त से मेहफूज़ रखे। अल्लाह तआला उस वक़्त के आने से पहले तौफीक़ दे कि हम अपना किरदार अदा करें। अब इस के लिये किसी तलवार की जरूरत नही, किसी तोप की जरूरत नही बल्कि इस के लिये सच्चे अक़ीदे और सच्चे अमल की जरूरत है और बैदारी की जरूरत है और ज़बान के सुथरा होने कि जरूरत है। जहाँ बैठो अगर वहाँ ऐसा हो रहा है तो तुम उन को प्यार से कहो और उन्हें अपील करो कि खुदारा बंद कर दो। अगए वह बंद नही करते तो फिर अपना पेग़ाम तो पहुँचाओ, उन से इस बात पर झगड़ा तो करो कि ये हमारे रसूल अलैहिस्सलाम के दीन की ख़िलाफ वर्ज़ी हो रही है। सरकार अलैहिस्सलाम के हम उम्मती हैं। हम से बर्दाश्त नही होता कि सरकार के दीन की मुख़ालिफत होती रहे और हम चुप कर के सुनते रहें या हम बुराई का हिस्सा बन जाएं। नही नही! हम इंशाअल्लाह बुराई का हिस्सा नही बनेंगे और आख़िरी सांस तक बुराइयों के ख़िलाफ जिहाद करते रहेंगे और ये मेरे रब का फज़्ल है कि इस पर अल्लाह तआला जरूर फाएदा मुरत्तब फरमाएगा।

♥ हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु हदीस रिवायत करते हैंः रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दफें बजाने से मना फरमाया और बांसूरी की आवाज़ से मना किया।

♥ हज़रते आईशा रदियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम मदीना शरीफ की गली में बैठे थे, एक नौजवान गुजरा, वह गाने गा रहा था। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस वक़्त उस को गाना गाते देखा तो इर्शाद फरमाया–" तू तबाह हो जाए, ऐ नौजवान क्या तुझे कुरआन पढ़ना नही आता ? कुरआन क्यों नही पढ़ता ? आवाज़ तो कुरआन की आना चाहिए।"

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस अंदाज़ में अपनी पूरी ज़िंदगी में इस तरह तबलीग़ फरमाते रहे। लोगों को झिंझोड़ते रहे, लोगों की बेहतरी के लिये उनकी इस्लाह करते रहे कि पूरा माहौल उस वक़्त का मोअत्तर था, मुनव्वर था, नूरानी था।

आज मेरे भाईयों! ये चिंगारी जो हमारे ख़िरमन में लगी हुई है हमें अभी तक नुकसान का अंदाज़ा नही हो सका। खुदा की कसम अगर हमें अंदाज़ा हो जाता तो कोई बंदा चुप कर के न बैठता। हर बंदा हर गली, हर मोहल्ले, हर शहर में मोतहर्रिक होता। असल में फित्ना ये है कि हमें नुकसान का अंदाज़ा नही हो रहा कि गाना गाने से सोसायटी का नुकसान कितना हो गया है और पूरी मिल्लत में ये नहूसत है और मुसलमानों में एक कमज़ोरी आ गई है कि इस नहूसत से हमारी हैबत ख़त्म हो गई है, हमारा रोब ख़त्म हो गया है।

कानों को गानों से बचा के रखने वालों का ईनाम

इस वास्ते मेरे भाईयों! हमें अपने पूरे माहौल को यूँ पाक करना है और सुथरा करना है कि कयामत का दिन होगा, उस दिन पता चलेगा की इस जिहाद का फायदा कितना है। अगर आज कान गंदे होंगे तो कयामत के दिन सिसा पिघला के डाला जाएगा, अगरा कान साफ होंगे तो फिर क्या होगा ? रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इर्शाद फरमाते हैं कि कयामत के दिन अल्लाह तआला उन लोगों को आवाज़ देगा जिन्होने अपने कानों को गाने सुनने से बचाए रखा था। अल्लाह तआला फरमाएगाः मेरे वो बंदे कहाँ हैं जिन्होने दुनिया मेम अपनी जानों को और अपने कानों को लह्व से और गाने बजाने से बचा के रखा था। जिन्होने अपनी जान को मेहफूज़ रखा और जिन्होने शैतानों की आवाज़ों से अपने आप को बचा के रखा है ? फरिश्ते कहेंगे! या अल्लाह ये सामने मौजूद हैं। अल्लाह तआला फरमाएगा! इन सब को कस्तूरी के बाग़ात में दाख़िल करो, कस्तूरी के बाग़ात में उनको बिठाओ और उन को तुम ख़बर दो "मेने उन पर अपने रिज़वान को हलाल कर दिया है।"

ए मेरे फरिश्तों उन को तुम मेरी तस्बीह सुनाओ। उन्होने दुनिया में अपने कानों को बचा के रखा था मगर आज उनका वक़्त आया है, उन के कानों को हम सवाब देंगे। कितना हसीन मंज़र होगा कि कस्तूरी के बाग़ और नूर का मिंबर होगा, उम्मती उस पर बैठा होगा और जन्नत के क़ारी जिन को रुहानी कहा जाता है वो बंदे के कान में वह आवाज़ पैदा करेंगे जो आवाज़ उस ने दुनिया में कभी भी नही सुनी होगी। ये कब मयस्सर होगा ? जिस वक़्त हमारे कान पाक और साफ रहेंगे। इस वास्ते मेरे भाईयों! इस मुख़्तसर से पैग़ाम को समझ कर आगे पहुँचाने की जरूरत है और इस सिलसिले में जो हलाक़तें हैं उस में कुछ हिस्सा नाम–निहाद मुफक़्क़रीन का भी है

जिन्होने गाने बजाने को दीन का हिस्सा करार दे दिया और वह मज़ीद हलाक़तों में शामिल होते चले जा रहे हैं और गाने बाजे को रूह की गिज़ा कहते हैं। ये गाना बजाना नफ्स की गिज़ा तो हो सकती है मगर रूह की गिज़ा नही हो सकती।

देखना है कि अगर उन मुफक़्क़िरीन के इस कहने में कि गाने बाजे रूह की गिज़ा है, कुछ भी सच्चाई है तो जमाने के माहौल के अंदर जो लोग गाने बजाने के करने वाले हैं, अगर ये रूह की गिज़ा है तो क्या उन की रूह मुतमईन है ? क्या वह तक़वा वाले हैं ? क्या वह परहेज़गारी वाले हैं ? अगर ये गाना बजााना रूह की गिज़ा होती तो फिर गाना सुनने वाले जमाने के वली होते, वह मुस्लेह होते और कौम का सरमाया होते। मगर वो क्या हैं– चोर हैं, डाकू हैं, बदमआश हैं और वह लोगों की इज़्ज़तें लूटने वाले हैं। तो गाना सुनने से वो खराब हुए न कि उन की इस्लाह हुई है। लिहाज़ा बंदे को ऐसी फिक्र से तौबा करना चाहिए कि इस माहौल में जब बदी शौले मार रही है फिर कहा जाए कि नही गाना रूह की गिज़ा है। ये मोमिन की रूह की गिज़ा नही बल्कि ये शेतानि गिज़ा है। जिस से लोगों में मज़ीद शैतानियत पैदा होती है। इंशा अल्लाह तआला जिस वक़्त इस में पाबंदी होगी तो उस के समरात मुआशरे में आना शुरू हो जाएंगे। मै आप को इस बात की ग्यारंटी देता हूँ अल्लाह के फज़्ल से कि जिस शख़्स को भी गाने सुनने की आदत है,वह उस आदत को बंद कर के देखे रिज़्क़ में और उस की ज़बान में बरक़तें होंगी, उस के घर में बरक़तें होंगी, घर के झगड़े बंद हो जाएंगे, नाचाकियाँ और बदसुलूकियाँ ख़त्म हो जाएंगी, कारोबार का मंदा ख़त्म हो जाएगा। जूँ जूँ पाबंदी करेगा दिल में नूर भी पैदा होगा, लज़्ज़त भी पैदा होगी, फिर वह वक़्त आएगा।

हज़रते हारिसा रदियल्लाहु अन्हु से रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा था हारिसा सुबह कैसे हुई तो कहते हैं कि अर्श तक निगाह पहुँच चुकी थी। ये सारी सूरते हाल तब मिलेगी जिस वक़्त हम अपने आप को सुथरा बना लेंगे और बिल– खुसूस इस मोजू के लिहाज़ से हर इंसान के लिए पाबंदी निहायत जरूरी है। जो घर साफ रखते हैं उन को गली में इसका सामना है, गाड़ी में सामना है तो कानों में उंगलियाँ देना मोमिन की पहचान होना चाहिए ताकि लोगों के सामने इसका इज़्हार भी हो और लोगों को पता भी हो । बात सुन लेना और कह देना कि दुरुस्त अच्छा और अमल न करना ये हमारे फहमे दीन का हिस्सा नही है। जितने भी लोगों के पास ये पेग़ाम पहुँचा, सब से ये मेरी दस्त बस्ता अपील है, इसको मै अपने उपर फर्ज़ और कर्ज़ समझता था इस कर्ज़ को उतारने के लिये तुम्हे बताया है। ये कीमती पैग़ाम तुम्हारे सामने पहुँचाया है। मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला हम सब की काविशों को कुबूल फरमाए और मेरा मौला म्यूज़िक के ख़िलाफ हाथों से जिहाद करने की तौफीक़ अता फरमाए।

व आख़िरु दाअवाना अनिल हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन!